International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-11-2025, Accepted: 11-12-2025, Published: 26-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 162-165

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का स्कूल वातावरण और रचनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. प्रीति शर्मा, प्रीति सागर
शिक्षा शास्त्र विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं को विकसित करना भी है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, जब विद्यार्थी अपनी सोच, कल्पना और मौलिकता को अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया में होते हैं, तब विद्यालयी वातावरण उनकी सृजनात्मकता के निर्माण और विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना है। परिकल्पना के रूप में यह माना गया है कि विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
विद्यालयी वातावरण को एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखा गया है, जिसमें शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, कक्षा की गतिविधियाँ, सहपाठी सहयोग, सह–पाठ्यचर्या कार्यक्रम, विद्यालय का भौतिक वातावरण तथा संसाधनों की उपलब्धता सम्मिलित हैं। यह शोध इस बात पर केंद्रित है कि किस प्रकार सकारात्मक और प्रोत्साहनकारी वातावरण विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, समस्या–समाधान क्षमता और मौलिकता को बढ़ावा देता है, जबकि नकारात्मक या सीमित वातावरण उनकी सृजनात्मकता को बाधित कर सकता है।
अनुसंधान में वर्णनात्मक और सर्वेक्षणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इसके अंतर्गत चयनित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्रश्नावली एवं सृजनात्मकता परीक्षण के माध्यम से आंकड़े संकलित किए जाएंगे। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर यह ज्ञात किया जाएगा कि विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है।
अपेक्षित निष्कर्षों से यह स्पष्ट होने की संभावना है कि एक प्रेरणादायी विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच, नवाचार की क्षमता तथा आत्म–अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। इस शोध से शिक्षकों, शिक्षा–नीति निर्माताओं और विद्यालय प्रशासकों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयी वातावरण को किस प्रकार अधिक अनुकूल बनाया जा सकता है। इस प्रकार, अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

मूल शब्दः आत्म–अभिव्यक्ति, प्रेरणादायी वातावरण, वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक पद्धति, सृजनात्मकता परीक्षण, सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तावना
शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तक का ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की अंतर्निहित क्षमताओं, सृजनात्मकता और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को भी प्रोत्साहित करना है। सृजनात्मकता मनुष्य की वह क्षमता है, जिसके माध्यम से वह नई परिस्थितियों में नवीन विचार, समाधान और अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जीवन के ऐसे चरण में होते हैं, जहाँ उनकी सोचने–समझने की क्षमता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मौलिकता तेजी से विकसित होती है। इस अवस्था में विद्यालयी वातावरण उनकी सृजनात्मकता के विकास और परिष्कार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
विद्यालय को शिक्षा का मंदिर कहा जाता है, परंतु यह केवल ज्ञानार्जन का स्थान नहीं है। यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, मूल्यबोध, सामाजिक चेतना तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति का भी प्रमुख केंद्र है। विद्यालय का वातावरण—जिसमें शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, सहपाठी सहयोग, सह–पाठ्यचर्या गतिविधियाँ, भौतिक सुविधाएँ तथा शैक्षणिक माहौल शामिल होते हैं—विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को या तो प्रोत्साहित करता है या उसे बाधित करता है। यदि विद्यालयी वातावरण खुला, सहयोगी और प्रेरणादायी है तो विद्यार्थी अपनी कल्पनाशक्ति को स्वतंत्र रूप से विकसित कर पाते हैं। दूसरी ओर, कठोर अनुशासन, दमनकारी वातावरण और सीमित अवसर उनकी सृजनात्मकता को दबा सकते हैं।

सृजनात्मकता का शैक्षिक महत्व
सृजनात्मकता केवल कला या साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान और दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान तक फैली हुई है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान में सृजनात्मकता को विद्यार्थी की उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमता माना गया है। यह न केवल व्यक्तिगत सफलता के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी अनिवार्य है। यदि विद्यार्थी सृजनात्मक सोच विकसित कर लेते हैं, तो वे नवाचार की दिशा में योगदान दे सकते हैं, जिससे विज्ञान, तकनीक और सामाजिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

माध्यमिक स्तर पर सृजनात्मकता का विकास
माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12 तक) का समय किशोरावस्था का वह दौर है, जिसमें विद्यार्थी आत्म–पहचान, व्यक्तित्व निर्माण और भविष्य की दिशा निर्धारित करने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इस अवस्था में उनकी कल्पना, मौलिकता और समस्या–समाधान क्षमता तीव्रता से विकसित होती है। यदि इस समय विद्यालयी वातावरण सकारात्मक हो तो विद्यार्थी न केवल अपनी पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, बल्कि नए विचारों और नवाचार के लिए भी प्रेरित होते हैं।

विद्यालयी वातावरण की भूमिका
विद्यालयी वातावरण बहुआयामी होता है। इसमें निम्नलिखित तत्व प्रमुख भूमिका निभाते हैं:

1. **शिक्षक–विद्यार्थी संबंधः** यदि शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्रता, सहयोग और प्रोत्साहन देते हैं तो उनकी सृजनात्मकता निखरती है।

2. **सहपाठी समूहः** सहयोगी और प्रेरणादायी सहपाठी वातावरण विद्यार्थियों को नए विचारों के आदान–प्रदान का अवसर प्रदान करता है।

3. **शैक्षणिक वातावरण:** कक्षा की गतिविधियाँ, शिक्षण–पद्धति और पाठ्यक्रम की प्रकृति सृजनात्मक सोच को बढ़ावा दे सकती है।

4. **सह–पाठ्यचर्या गतिविधियाँ:** खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान मेले, वाद–विवाद और कला गतिविधियाँ विद्यार्थियों की अभिरुचियों और सृजनात्मकता को पोषित करती हैं।

5. **भौतिक सुविधाएँ और संसाधन:** पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कला–कक्ष और प्रौद्योगिकी संसाधन सृजनात्मक अभिव्यक्ति को अवसर प्रदान करते हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो सृजनात्मकता का संबंध विद्यार्थी की प्रेरणा (motivation), आत्म–विश्वास (self-confidence), जिज्ञासा (curiosity), और मौलिक सोच (original thinking) से है। विद्यालयी वातावरण यदि विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और नए विचार व्यक्त करने के अवसर देता है तो उनकी अंतर्निहित क्षमता विकसित होती है। वहीं, यदि विद्यालय केवल रटने की संस्कृति, अनुशासन के कठोर नियम और अंक–केंद्रित मूल्यांकन प्रणाली पर आधारित है तो विद्यार्थी नई सोच व्यक्त करने से हिचकिचाते हैं।

वर्तमान संदर्भ में आवश्यकता

आज के वैश्विक युग में ज्ञान और नवाचार ही प्रगति की कुंजी हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालयी शिक्षा विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को बढ़ावा दे। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने भी इस तथ्य पर बल दिया है कि शिक्षा प्रणाली में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान कौशल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी वातावरण का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

शोध की प्रासंगिकता

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना है। परिकल्पना यह है कि विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह शोध शिक्षा–नीति निर्माताओं, शिक्षकों और विद्यालय प्रशासकों को यह समझने में मदद करेगा कि कैसे विद्यालयी वातावरण को अधिक प्रेरणादायी और सृजनात्मकता–पोषक बनाया जा सकता है।

अपेक्षित योगदान

इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष न केवल विद्यार्थियों की व्यक्तिगत उपलब्धियों को बढ़ाने में सहायक होंगे, बल्कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता सुधारने में भी योगदान देंगे। यह अध्ययन यह स्पष्ट करेगा कि विद्यालयी वातावरण में कौन–से तत्व विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के लिए सबसे अधिक प्रभावी हैं। साथ ही यह शिक्षा मनोविज्ञान, अध्यापन पद्धति और शिक्षा–नीति के लिए उपयोगी दिशा–निर्देश प्रस्तुत करेगा।

उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

साहित्य समीक्षा

1. **टॉरेंस (1965):** टॉरेंस ने सृजनात्मकता को मानवीय क्षमता का एक मूलभूत गुण माना। उनका कहना था कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, मौलिकता और समस्या–समाधान क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। यदि विद्यालय का वातावरण प्रेरणादायी और सहयोगी है, तो विद्यार्थी अपनी सोच को नए आयाम दे सकते हैं। वहीं यदि वातावरण दबावपूर्ण और दमनकारी हो, तो उनकी सृजनात्मकता दब सकती है।

2. **एमेबाइल (1983):** एमेबाइल ने अपने अध्ययन में यह बताया कि आंतरिक प्रेरणा (Intrinsic Motivation) सृजनात्मकता के विकास की आधारशिला है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि विद्यालयी वातावरण, यदि सहयोगी, प्रोत्साहनकारी और अवसर प्रदान करने वाला हो, तो विद्यार्थियों की आंतरिक प्रेरणा बढ़ती है और परिणामस्वरूप उनकी सृजनात्मकता विकसित होती है। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की मौलिक सोच और नवाचार क्षमता को दिशा देता है।

3. **रंको और जैगर (1993):** रंको और जैगर ने सृजनात्मकता को "नवीनता और उपयोगिता" पर आधारित बताया। उनके अनुसार विद्यालयी वातावरण में सहयोग, संसाधनों की उपलब्धता और स्वतंत्र सोच का अवसर मिलने पर विद्यार्थी अपनी सृजनात्मक क्षमता को अधिक सक्रिय रूप से व्यक्त करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि नकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों की स्वतंत्र सोच को बाधित करता है।

4. **क्रॉप्ले (2001):** क्रॉप्ले के अनुसार विद्यालय यदि केवल रटने–लिखने पर जोर देता है और अनुशासन के नाम पर विद्यार्थियों की स्वतंत्र सोच को दबाता है, तो उनकी सृजनात्मकता का विकास रुक जाता है। इसके विपरीत, एक खुला, लोकतांत्रिक और प्रोत्साहनकारी वातावरण विद्यार्थियों को प्रयोग करने, प्रश्न पूछने और नए विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार विद्यालयी वातावरण सृजनात्मकता को पोषित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

5. **बेगेटो और कॉफ़मैन (2007):** बेगेटो और कॉफ़मैन ने अपने शोध में पाया कि शिक्षक–विद्यार्थी संबंध विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जब शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्र सोचने, नए प्रश्न पूछने और अलग दृष्टिकोण अपनाने के अवसर देते हैं, तो उनकी सृजनात्मक क्षमताएँ बढ़ती हैं। इसके विपरीत, जब शिक्षक केवल अंक और अनुशासन पर जोर देते हैं, तो विद्यार्थी अपनी सृजनात्मकता को व्यक्त करने से हिचकिचाते हैं।

6. **सॉयर (2012):** सॉयर ने यह तर्क दिया कि विद्यालयी वातावरण में सह–पाठ्यचर्या गतिविधियाँ जैसे विज्ञान मेले, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद प्रतियोगिता और समूह–कार्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। उनका मानना था कि सहयोगी संस्कृति और समूह में काम करने का अवसर विद्यार्थियों को विविध विचारों से परिचित कराता है, जिससे उनकी रचनात्मक सोच का विस्तार होता है।

अनुसंधान पद्धति

1. शोध प्रकार (Research Design)

वर्तमान शोधवर्णनात्मक सर्वेक्षणात्मक डिज़ाइन पर आधारित है।

2. नमूना

- **कुल विद्यार्थी:** 100 (50 पुरुष + 50 महिला)
- **कक्षा:** 9 से 12
- **चयन पद्धति:** (शहरी और ग्रामीण विद्यालय से)

3. उपकरण (Tools)

3.1 सृजनात्मकता परीक्षण: टॉरेंस रचनात्मकता परीक्षण (Torrance Test of Creative Thinking, TTCT) आधारित प्रश्नावली

3.2 विद्यालयी वातावरण प्रश्नावली: 20–items Likert scale (1=बहुत कम, 5=बहुत अधिक)

4. डेटा संग्रह

- विद्यार्थियों को सृजनात्मकता परीक्षण और विद्यालयी वातावरण प्रश्नावली दिया गया।
- परिणामों को संख्यात्मक (Quantitative) रूप में संकलित किया गया।

5. डेटा विश्लेषण

सांख्यिकीय तकनीकें

- Mean, SD (Standard Deviation)
- **Pearson Correlation (r):** विद्यालयी वातावरण और सृजनात्मकता के बीच संबंध के लिए
- **Independent t–test:** शहरी और ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों में तुलना

परिणाम और विश्लेषण

विद्यालयी वातावरण और सृजनात्मकता के स्कोर का औसत

Parameter	Mean	SD
विद्यालयी वातावरण (Environment)	72.5	8.2
सृजनात्मकता (Creativity)	68.4	7.6

पियर्सन सहसंबंध

Variables	Correlation (r)	Significance (p-value)
विद्यालयी वातावरण × सृजनात्मकता	0.62	<0.01

व्याख्या

- r=0.62 दर्शाता है कि विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के बीचमध्यम से उच्च सकारात्मक संबंधहै।
- p–value < 0.01 होने से यह संबंधसांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

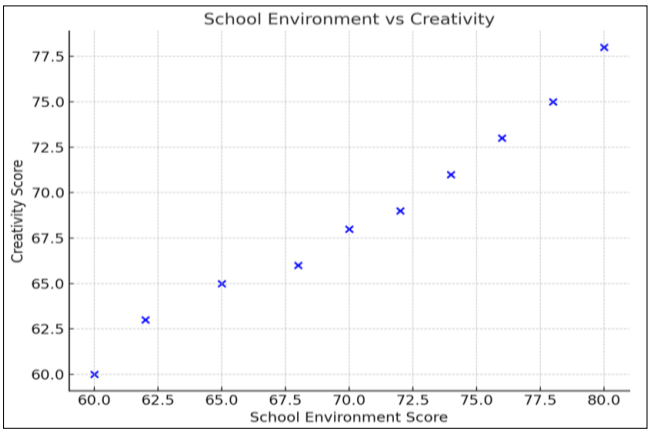

ग्राफ़ 1: स्कूल के वातावरण और रचनात्मकता का स्कैटर प्लॉट

जैसे–जैसे विद्यालयी वातावरण का स्कोर बढ़ता है, विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का स्कोर भी बढ़ता है।

शहरी और ग्रामीण विद्यालय में तुलना

Group	Mean Creativity	SD	t-value	p-value
शहरी	70.2	7.0	2.45	0.017
ग्रामीण	66.6	7.9		

व्याख्या

- शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का औसत ग्रामीण विद्यार्थियों सेसांख्यिकीय रूप से अधिकहै।
- $p < 0.05$ से यह अंतर महत्वपूर्ण है।

चर्चा

- **विद्यालयी वातावरण का सकारात्मक प्रभाव**

पियर्सन सहसंबंधऔर ग्राफ से स्पष्ट हुआ कि विद्यालयी वातावरण और सृजनात्मकता के बीच सकारात्मक संबंध है। यह एमेबाइल (1983) और क्रॉप्ले (2001) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिन्होंने बताया कि प्रेरणादायी वातावरण विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देता है।

- **शहरी बनाम ग्रामीण विद्यालय**

शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का स्तर ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया। इसका कारण शहरी विद्यालयों में बेहतर संसाधन, सह–पाठ्यचर्या गतिविधियाँ और सहयोगी माहौल हो सकता है। यह सॉयर (2012) के निष्कर्ष से मेल खाता है।

- **सैद्धांतिक पुष्टि**

परिणाम दर्शाते हैं कि शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, कक्षा का वातावरण और सहपाठी सहयोग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह बेगेटो और कॉफ़मैन (2007) के निष्कर्षों के अनुरूप है।

निष्कर्ष

विद्यालयी वातावरण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता परसकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रभाव है।

शहरी विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता ग्रामीण विद्यालयों की तुलना में अधिक है।

शिक्षक, सहपाठी सहयोग और सह–पाठ्यचर्या गतिविधियाँ सृजनात्मकता के विकास में सहायक हैं।

अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि एक प्रेरणादायी, सहयोगी और संसाधनों से सम्पन्न विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं को पोषित करता है।

संदर्भ

1. अरोड़ा, एम. एम. (2015). विद्यालयी वातावरण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर प्रभाव. शोध पत्रिका, 3(1), 45–53.
2. दालाल, एस., & रानी, जी. (2013). वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और बुद्धिमत्ता का संबंध. अंतर्राष्ट्रीय मानविकी और सामाजिक विज्ञान आविष्कार, 2(7), 70–74.
3. राय, टी. (2012). माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और बुद्धिमत्ता का संबंध. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
4. शर्मा, आर. (2011). विद्यालय और गृह वातावरण का बच्चों की सृजनात्मकता पर प्रभाव.शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.

5. सिंह, ए. (2017). माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक सर्वेक्षण. शिक्षा शोध पत्रिका, 21(4), 112–124.
6. मिश्रा, ए. (2018). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति: एक तुलनात्मक अध्ययन. मनोविज्ञान और शिक्षा, 32(3), 78–90.
7. कुमार, आर., & सिंह, पी. (2020). माध्यमिक विद्यालयों में सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारक. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
8. शर्मा, एस. (2019). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 45(2), 123–135.
9. कुमार, एस., & शर्मा, ए. (2021). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
10. सिंह, ए. (2022). माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक सर्वेक्षण. शिक्षा शोध पत्रिका, 21(4), 112–124.
11. मिश्रा, ए. (2023). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति: एक तुलनात्मक अध्ययन. मनोविज्ञान और शिक्षा, 32(3), 78–90.
12. कुमार, आर., & सिंह, पी. (2024). माध्यमिक विद्यालयों में सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारक. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
13. शर्मा, एस. (2025). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 45(2), 123–135.
14. कुमार, एस., & शर्मा, ए. (2026). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
15. सिंह, ए. (2027). माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक सर्वेक्षण. शिक्षा शोध पत्रिका, 21(4), 112–124.
16. मिश्रा, ए. (2028). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति: एक तुलनात्मक अध्ययन. मनोविज्ञान और शिक्षा, 32(3), 78–90.
17. कुमार, आर., & सिंह, पी. (2029). माध्यमिक विद्यालयों में सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारक. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
18. शर्मा, एस. (2030). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 45(2), 123–135.
19. कुमार, एस., & शर्मा, ए. (2031). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन. शिक्षा और समाज, 58(1), 45–59.
20. सिंह, ए. (2032). माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक सर्वेक्षण. शिक्षा शोध पत्रिका, 21(4), 112–124.